**दीवारें बुलाती रहीं, मैं ही अनजान था |**

समझ नहीं आ रहा कहाँ से शुरू करूँ | क्यूँ गया था समझाने की कोशिश करूँ, या अपनी अनुपस्थिति को नज़रंदाज़ कर दूं मानो में कहीं नहीं गया था? शायद यही बेहतर होगा | समय कहाँ मेरे लिए रुका था, जो में समय बीत जाने का हिसाब लगाने बैठूं | बस इतना समझिए कि इस बार मैंने समय से अपने लिए कुछ समय अलग से माँगा था, अब पूरा हो चला है |

घर लौटना अच्छा लगता है न? भले ही किवाडों पर नौ मन के ताले लगा कर क्यूँ न गए हों, एक छोटी सी आशा का दीप मन में जलता है, घर में कुछ नया मिलेगा |

कितना समय बीत गया है, कोई बताएगा मुझको? मेरी स्मृति क्षीण हो चली है | क्या कोई आया था मेरी गैरहाजिरी में यहाँ पर? यह दीवारों पर क्या कुछ लिखा हुआ है? जब तक यह बस्ती बसती थी, तब तो यहाँ ऐसा कभी नहीं हुआ? बेसुध तो में था, लोगों को क्या हुआ?

मैंने तो सुना था कि मजारों पर मन्नतें मांगते हैं, यहाँ तो कब्र खोद कर नाश हुआ है | कौन जिम्मेवार है? दीवारें भी चुप चुप सी हैं | दोषी जब अपने आप पूछे के दोषी कौन है तो प्रताडित क्या जवाब देगा |

आज दीवारों से कई पोंछते हुए एहसास होता है कि घर में भी जीवन होता है | दीवारें, दरवाज़े, खिड़कियाँ, चौखट, परदे, पलंग, सब, सब सांस लेते हैं, हमारे होने से उनमे भी सुकून सा होता है | दीवारों से लिपट कर रोए हो कभी? दीवारें मुझ से लिपट कर आज रोई हैं | पर जब भी में पूछता हूँ कि उनके ऐसे हश्र के लिए कौन उत्तरदायी है, तो चुपके से मेरी ओर इशारा कर देती हैं |

“तुम!”

दीवारें बुलाती रहीं, मैं ही अनजान था,

जो तलाश में निकल पड़ा,

लौटा, तो घर कह उठा,

तुम बिन घर, घर सा नहीं लगता |